नई दिल्ली, शनिवार
16 जून 2018
नोएडा
मूल्य ₹ 4.00
पृष्ठ 20+8+8+4=40

दैनिक जागरण

www.jagran.com

दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, हरियाणा, उत्तराखंड, बिहार, झारखंड, पंजाब, जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और प. बंगाल से प्रकाशित

सोसायटी में कूड़े को खाद में बदलने वाली मशीन लगी, बनेगी नजीर

सोसायटी में प्रतिदिन निकलने वाले कचरे को जैविक खाद में किया जा रहा तब्दील

अजब सिंह भाटी ● ग्रेटर नोएडा

शहरों में कचरा निस्तारण की चुनौती पहाड़ जैसी विशाल हो चुकी है। शहरवासी हर दिन टनों कचरा पैदाकर देते हैं, लेकिन उसे अपने आस पास देखना नहीं चाहते। नोएडा में डंपिंग ग्राउंड को लेकर चल रहा विरोध इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। दिल्ली के गाजीपुर में कचरा के ढेर पहाड़ में बदल चुका है। हर दिन निकलने वाले कचरे के निस्तारण के लिए ग्रेटर नोएडा वेस्ट की गौर सिटी सोसायटी ने जो व्यवस्था की है, वह न सिर्फ शहर में दिनों दिन गंभीर होते कचरे की चुनौती को कम कर सकती है, बल्कि शहर की अन्य सोसायटी के लिए भी एक आदर्श उदाहरण बन सकती है।

पर्यावरण संरक्षण

सोसायटी में ठोस कूड़े के निस्तारण के लिए मशीन लगी है, जो फ्लैट से प्रतिदिन निकलने वाले कचरे को जैविक खाद में तब्दील करती है। जैविक खाद सोसायटी को हरा भरा रखने में उपयोग होता है। ग्रेटर नोएडा वेस्ट में करीब 203 बिल्डर परियोजनाएं हैं। इनमें आने वाले समय में पांच लाख लोगों के रहने की उम्मीद है। कई सोसायटी आबाद हो चुकी है।

इससे सहज अंदाजा लगाया जा सकता है कि ग्रेटर नोएडा वेस्ट में कचरा निस्तारण आने वाले समय में बड़ी चुनौती होगा। गौर सिटी की सोसायटी में अभी 16 हजार परिवार रहते हैं। सोसायटी से निकलने वाले कचरे के निस्तारण के लिए कोई ठोस इंतजाम नहीं था। ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण भी इलाके में कचरा निस्तारण की कोई व्यवस्था नहीं कर सका है। हर दिन निकालने वाले कचरे से निबटने के लिए कंपोस्ट मशीन लगाने का फैसला लिया गया। जिसके बाद सोसायटी के लोगों ने राहत की सास ली है।

ग्रेनो वेस्ट स्थित गौर सिटी सोसायटी में कूड़ा एकत्रित करते कर्मचारी ● जागरण

जैविक खाद सोसायटी को हरा भरा रखने में उपयोग होता है। ग्रेनो वेस्ट में करीब 203 बिल्डर परियोजनाएं, आने वाले समय में रहेंगे पांच लाख लोग

ऐसे निस्तारित हो रहा सोसायटी का कचरा

सोसायटी को कूड़े की आपदा से बचाने के लिए सभी टावरों में डस्टबीन रखी गई है। फ्लैटों में रहने वाले लोग गीले व सूखे कूड़े को अलग-अलग डस्टबीन में डालते है। जिसे उठाकर कर्मचारी कंपोस्ट मशीन के पास एकत्र कर देते है। जिसमें गीले कूड़े को आर्गेनिक वेस्ट कम्पोजीटर के जरिए खाद में आसानी से बदला जाता है। जबकि सूखे कूड़े जिसमें मेटल शीशे और प्लास्टिक को अलग कर कबाड़ी को बेच दिया जाता है। सोसायटी प्रबंधन का दावा है कि इस मशीन के जरिए एक साल में 54 लाख किलो कूड़े को खाद में परिवर्तित किया जाएगा। गौर सिटी के अलावा यह मशीन गौर सिद्धार्थ में भी लगी है।